एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (अप्रैल, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और मूल्य संवर्धन का अर्थशास्त्र

डॉ. हरकेश कुमार बलाई[1] एवं *आकांक्षा[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत

[2]स्टूडेंट, बी.एससी. (ऑनर्स) एग्रीकल्चर, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: akanshaydv1208@gmail.com

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की अधिकांश जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर करती है। देश में विभिन्न प्रकार की फसलें, फल, सब्जियाँ, तिलहन, दलहन और दुग्ध उत्पाद प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होते हैं। परंतु केवल उत्पादन करना ही आर्थिक समृद्धि के लिए पर्याप्त नहीं है। यदि इन उत्पादों का उचित संरक्षण, रूपांतरण और विपणन किया जाए, तभी वास्तविक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसी कारण खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और मूल्य संवर्धन का अर्थशास्त्र अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का अर्थ और स्वरूप

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग वह क्षेत्र है जिसमें कच्चे कृषि उत्पादों को विभिन्न वैज्ञानिक एवं पारंपरिक विधियों द्वारा उपयोगी, सुरक्षित, पौष्टिक और लंबे समय तक टिकाऊ बनाया जाता है। इसमें सफाई, छंटाई, पकाना, सुखाना, जमाना, किण्वन, परिरक्षण और पैकेजिंग जैसी प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं।

उदाहरण के रूप में—

- दूध से दही, पनीर, घी और मिष्ठान बनाना,
- गेहूँ से आटा, सूजी, ब्रेड और बिस्कुट बनाना,
- फल एवं सब्जियों से अचार, जैम, जेली और रस तैयार करना।
- इस प्रकार यह उद्योग कृषि और उद्योग के बीच एक सेतु का कार्य करता है।

मूल्य संवर्धन का अर्थ और अवधारणा

वर्ष	गेहूं	चावल	टमाटर	दूध (₹/लीटर)
2021	₹22–25	₹30–35	₹20–40	₹45–50
2022	₹25–28	₹32–38	₹25–60	₹50–55
2023	₹28–32	₹35–42	₹30–80	₹55–60
2024	₹30–35	₹38–45	₹40–100	₹60–65
2025	₹32–38	₹40–50	₹50–120	₹65–70

मूल्य संवर्धन का तात्पर्य है किसी उत्पाद में ऐसी प्रक्रिया या परिवर्तन करना जिससे उसका आर्थिक मूल्य, उपयोगिता और बाजार में मांग बढ़ जाए। जब कच्चे उत्पाद को सीधे बेचने के बजाय उसे प्रसंस्कृत कर अधिक आकर्षक, टिकाऊ और उपयोगी बनाया जाता है, तो उसकी कीमत स्वतः बढ़ जाती है।

उदाहरण के लिए—

- कच्चे आम को बेचने के बजाय उससे अचार या मुरब्बा बनाना,
- टमाटर से सॉस या चटनी बनाना,
- दूध से पनीर या मिठाई बनाना।

- इस प्रकार मूल्य संवर्धन किसानों और उत्पादकों के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत बनता है।

खाद्य प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन का आर्थिक महत्व

- **किसानों की आय में वृद्धि**

कच्चे उत्पादों की तुलना में प्रसंस्कृत उत्पादों का मूल्य अधिक होता है। इससे किसानों को अपनी उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त होता है और उनकी आय में वृद्धि होती है।

- **रोजगार के अवसरों का सृजन**

इस उद्योग में उत्पादन, प्रसंस्करण, भंडारण, पैकेजिंग, परिवहन और विपणन जैसे कई स्तरों पर रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में लघु और कुटीर उद्योगों के रूप में यह रोजगार का प्रमुख स्रोत बन सकता है।

- **फसलोपरांत हानि में कमी**

भारत में हर वर्ष बड़ी मात्रा में फल और सब्जियाँ खराब हो जाती हैं। प्रसंस्करण द्वारा इन उत्पादों को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है, जिससे हानि में कमी आती है।

- **निर्यात में वृद्धि और विदेशी मुद्रा अर्जन**

प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की वैश्विक बाजार में अधिक मांग होती है। उच्च गुणवत्ता और मानकों के अनुसार तैयार उत्पादों का निर्यात करके देश विदेशी मुद्रा अर्जित कर सकता है।

- **मूल्य स्थिरीकरण**

जब अधिक उत्पादन होता है, तो कीमतें गिर जाती हैं। प्रसंस्करण के माध्यम से उत्पादों को संग्रहित कर भविष्य में बेचा जा सकता है, जिससे कीमतों में संतुलन बना रहता है।

- **ग्रामीण औद्योगिकीकरण को बढ़ावा**

गाँवों में छोटे स्तर पर प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित कर स्थानीय संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होती है।

- **पोषण स्तर में सुधार**

प्रसंस्करण के माध्यम से खाद्य पदार्थों को अधिक पौष्टिक और सुरक्षित बनाया जा सकता है। इससे उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य में भी सुधार होता है।

मूल्य संवर्धन की प्रमुख विधियाँ

- **सुखाना और निर्जलीकरण** – फल, सब्जियाँ और अनाज को सुखाकर लंबे समय तक सुरक्षित रखना।
- **शीत भंडारण और जमाना** – उत्पादों को ठंडे तापमान पर संरक्षित करना।
- **किण्वन प्रक्रिया** – जैसे दही, इडली, डोसा आदि का निर्माण।
- **परिरक्षण** – रासायनिक या प्राकृतिक विधियों से खाद्य पदार्थों को सुरक्षित रखना।
- **पैकेजिंग और ब्रांडिंग** – आकर्षक पैकेजिंग द्वारा उत्पाद की पहचान और बाजार में मांग बढ़ाना।
- **मिश्रण और प्रसंस्करण** – विभिन्न उत्पादों को मिलाकर नए उत्पाद तैयार करना।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की संरचना

यह उद्योग तीन स्तरों पर कार्य करता है—
लघु एवं कुटीर स्तर (घरेलू या छोटे उद्यम)
मध्यम स्तर (स्थानीय इकाइयाँ)
बड़े औद्योगिक स्तर (वृहद उत्पादन और निर्यात)
इन सभी स्तरों का समन्वय ही इस क्षेत्र के समग्र विकास में सहायक होता है।

चुनौतियाँ और समस्याएँ

- आधुनिक भंडारण और परिवहन सुविधाओं की कमी
- तकनीकी ज्ञान और प्रशिक्षण का अभाव
- पूंजी और निवेश की सीमित उपलब्धता

- बाजार तक पहुँच की कमी
- गुणवत्ता मानकों का अभाव
- किसानों और उद्यमियों में जागरूकता की कमी

इन समस्याओं के कारण इस उद्योग की पूरी क्षमता का उपयोग नहीं हो पाता।

सरकारी प्रयास और योजनाएँ

सरकार द्वारा इस क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जैसे प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना हेतु सहायता, प्रशिक्षण कार्यक्रम, वित्तीय अनुदान और बुनियादी ढाँचे का विकास। इन प्रयासों से किसानों और उद्यमियों को प्रोत्साहन मिल रहा है और उद्योग का विस्तार हो रहा है।

भविष्य की संभावनाएँ

भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के विकास की अपार संभावनाएँ हैं। बढ़ती जनसंख्या, बदलती जीवनशैली, पैक्ड खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग और निर्यात के अवसर इस क्षेत्र को और अधिक महत्वपूर्ण बनाते हैं। यदि उचित नीतियाँ, तकनीक और निवेश उपलब्ध कराया जाए, तो यह उद्योग देश की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकता है।

निष्कर्ष

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और मूल्य संवर्धन न केवल कृषि क्षेत्र को सशक्त बनाते हैं, बल्कि संपूर्ण अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह किसानों की आय बढ़ाने, रोजगार सृजन, संसाधनों के बेहतर उपयोग और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में सहायक है। इसलिए इस क्षेत्र में अधिक निवेश, जागरूकता और तकनीकी विकास की आवश्यकता है, ताकि देश आर्थिक रूप से और अधिक सुदृढ़ बन सके।